भारत की आर्थिक समस्या और समाधान

Iqbal Mangalam — Final B. A. Economics

मनुष्य राष्ट्र का एक अभिन्न अंग है। उसकी समस्यायें राष्ट्र की समस्यायें समझी जाती हैं। वर्तमान युग प्राचीन काल से बिलकुल भिन्न है, अत: आज की राष्ट्रीय समस्यायें प्राचीन राष्ट्र की समस्याओं से भिन्न रहती हैं।

भारत एक विशाल राष्ट्र है और उसकी समस्यायें भी बिशाल और जटिल हैं। परन्तु भारत की आर्थिक समस्या के सामने भारत की अन्य समस्यायें गौण हैं। हमारी आर्थिक समस्या स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ साथ उपस्थित हुई है। हम इस समस्या का समाधान आज तक नहीं कर पाये हैं। हर वर्ष भारत सरकार इस देश के लोगों को खिलाने के लिए दूसरे देशों से कर्ज लेती आयी है। इस से हमारी आर्थिक दशा दिन व दिन बुरी होती आयी है। देश की आर्थिक और अन्य क्षेत्रों को सुधारने के उद्देश्य से हमने पंचवर्षीय योजनाओं का रास्ता स्वीकार किया। अब कई योजनायें हुई। किंतु देश की आर्थिक दशा सुधरी नहीं।

भारत की बढती विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरकार को दूसरे देशों का मुँह देखना पडता है। विश्व बैंक और अन्य राष्ट्रों से उधार लेने से सरकार का कर्ज दिन व दिन बढता रहता है। इस प्रकार राष्ट्र अपनी बडी जन संख्या को भोजन देती है। भारत की भूमि में जो चीज़ें उपजती हैं उनका आधा ही बाज़ार में जाता है। बाकी आधा काले बाज़ार में जाता है। इस तरह व्यापार के हर क्षेत्र में काला धंधा जोरों से चल रहा है। इस काले धन्धे के कारण भारत सरकार पूरी मालगुज़ारी वसूल नहीं कर पाती।

भारत सरकार की दूषित विदेश-नीति भी हमारी आर्थिक समस्या को जटिल बनाती है और इस समस्या को हल करने के मार्ग में बाधा डालती है। चीन और पाकिस्थान के साथ हुए युद्धों के कारण भी भारत की आर्थिक अवस्था बुरी बनी। इस देश में भिन्न भाषाएँ और आचार-विचार होने से जो राष्ट्रीय एकता की कमी महसूस होती है वह देश की समस्याओं को संकीर्ण बनाती है। इन सब से प्रमुख और ध्यान देने योग्य बात यह है कि हम भारतवासी सुस्त और कामचोर हैं। बिना कठिन यत्न किये आराम की रोटी चाहने वाले हैं।

देश की इन समस्याओं का समाधान ढूँढना सरल कार्य नहीं है। सब से पहले हमें उत्पादन की मात्रा बढानी होगी। और इस के लिए सरकार को उत्पादकों की सहायता करनी होगी। काला बाज़ारी करने वालों के विरुद्ध कठिन दण्ड-नीति अपनानी होगी। जनसंख्या के विकास को रोकने के यत्न में एक कदम और आगे बढाना होगा। इस के लिए मुख्य रूप से गाँवों में और अशिक्षित लोगों के बीच 'परिवार नियोजन' का संदेश फैलाना होगा। पंचवर्षीय योजनाओं को पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिए कठिन परिश्रम और ईमानदारी अत्यंत आवश्यक है। नहीं तो योजनाएँ कागज़ में ही जीएँगी। योजनाओं में कृषी को अधिक महत्व देना चाहिए। इस के लिए नवीन यंत्रों, खादों और अन्य वैज्ञानिकतरीकों का आश्रय लेना चाहिए। भारत की व्यापार-नीति भी बदलनी चाहिए। विदेशों को हमारी चीज़ों की ओर आकर्षित करना चाहिए। इस के लिए देश में बनने वाले यंत्रों और अन्य वस्तुओं का स्तर ऊँचा रहना होगा।

इस प्रकार देश की आर्थिक समस्या को हल करने के यत्न में सरकार और जनता दोनों को सक्रिय भाग लेना चाहिए।

दुख गीत

Nazar T. P. — II P.D.C.

जीवन
दुख है,
दुख का
इक महाकाव्य है।

नहीं,
रोना नहीं,
रोऊँगा नहीं।
लेकिन
मेरी हँसी
वह तो होती नहीं हँसी।

जब से
मेरी आँख खुली,
शून्यता है चारों ओर।
मैं अकेला,
है नहीं कोई सहारा
साथी था दुख।

जब मैं
आँखें बन्द करता हूँ
बरात,
यादों की,
दुख भरी यादों की
बरात आती है।

सपने,
केवल सपने
आनंद, आराम और आश्वास के दिन
केवल सपने।

यह धरती,
बुरी है धरती
यहाँ कोई भी
न अपना रहा।

माता न माता
पत्नी न पत्नी
पिता न पिता
दुनिया है
दर्द भरी दुनिया।

नहीं, नहीं
मैं नहीं चल सकता
यह रास्ता,
ज़िन्दगी का रास्ता
बहुत लंबा है।
एक दूसरी दुनिया
पुकार रही है मुझे
मरजुआना और
एल. एस. डी. की दुनिया
मेरी दुनिया,
प्यारी दुनिया !!

कुम्मिणी अमर है

Ambalangadan Mohamed — I M. A. English Litt.

सूरज सिर के ऊपर जल रहा है। नभ में और धरणी में धूप है। दोपहर का समय है। फिर भी छत पर आया। कई लोगों की ज़ोर ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनकर गरमी की परवाह किये बिना ऊपर चढ आया।

खेत के उस पार एक झोंपडी है। उसके आंगन में एक बडी भीड है। उस में नौ-दस वर्ष के लडके लडकियाँ हैं, सत्तर साल के बुढे-बुढियाँ भी। औरतों का रोना जोर पकड रहा था।

बात क्या है। ऐसी गर्मी में कैसे वहाँ तक जाऊँ। लगता है, उस झोंपडी में कोई बडी विपत्ति हुई है। रोना तो हमारे गाव में साधारण सी बात है। शादी के वक्त यहाँ की दुल्हिनें जोर से रोती हैं। कोई आचानक बीमार हो जाए तो भी लोग रोने लगते हैं। लेकिन आज की बात कुछ भिन्न मालूम होती है।

एक घंटे का दसवां भाग इस प्रकार बीत गया होगा कि अचानक कुछ नौजवान एक शव मंच लेकर बाहर निकले। घर में सम्मिलित लोगों के मुँह से 'कुम्मिणी' 'कुम्मिणी' शब्द गूँज उठा। मुझे मालूम हुआ कि हमारी कुम्मिणी अब इस दुनिया में नहीं रही। लोगों के इस प्रकार फूट फूट कर रोने का यही कारण है।

इस देहात की हरिजन जाति में एक अलिखित नियम प्रचलित हैं। किसी की मृत्यु होने पर उस घर में आनेवाली सब औरतों को रोना चाहिए। रोना नहीं आता तो किसी न किसी प्रकार आँखों से आँसू बहाना है।

कुम्मिणी की मृत्यु पर मुझे दुख हुआ। लेकिन मैं रोया नहीं। उसकी चौदह संतानें जोर से रो रही हैं।

अब कुम्मिणी की लाश लेकर लोग चल पडे हैं। झोंपडी के भीतर से उसकी इकलौती बेटी काली की ऊँची आवाज अलग से सुनाई पडती है। उसको चाहिए कि सात दिन तक अपना रोना बन्द न हो।

काल ने कुम्मिणी की जान ले ली। लेकिन वह अमर है। वह हमेश हमारे दिलों में जिन्दा रहेगी।

कुम्मिणी बूढी थी। किन्तु उसका स्वास्थ्य अच्छा था। बुढापे में भी उसको लाठी की जरूरत नहीं पडी थी। किसी को जुकाम हो जाने पर वह कहती —

"इन बच्चों को रोज बीमारी ही बीमारी है। मुझे नहीं मालूम कि सिरदर्द क्या चीज है।"

ठीक है। कुम्मिणी ने कभी दवा नहीं ली है। क्योंकि पहले कभी भी वह बीमार नहीं हुई थी।

आज कुम्मिणी की छाती में दर्द हुआ। सारे शररी में दर्द फैल गया। बेटा दवा लेने चला। उसके आने के पहले ही कुम्मिणी अपना पुराना शरीर छोडकर चल बसी।

आँखों में अब भी उसका रूप है। धूप में मेहनत करने से उसका शरीर काला था। लेकिन बाल रुई सी सफेद।

देहात का प्रत्येक व्यक्ति उसको जानता था। वह हर एक बच्चे को जानती थी। वह अपनी झोंपडी में नहीं रहती थी। मुसलमान लोग उसके पडोसी थे। वह उनके लिए काम करती थी। उनके मकान में सोने को जगह मिलना कुम्मिणी का हक था।

कुम्मिणी अपढ थी; अखबार नही पढती थी। तो भी अखबार पढनेवालों से भी ज्यादा दुनिया की खबर वह जानती थी।

यदि किसी को बीमारी हो, किसी की मृत्यु हुई हो या किसी ने अपनी बीबी को घर से निकाल दिया हो तो सब का पूरा बिवरण कुम्मिणी से मिलता था। वह हर घर के द्वार पर जाती थी। हरेक घर में उसका स्वागत होता था।

कुम्मिणी पान खाती थी। सबेरे से शाम तक चाय पीती थी। घरों की मालिकिनें उसे चाय और खाने की चीजें देती थीं। इसलिए हर घर में बातचीत बडी देर तक चलती थी।

यह दुनिया बहुत विशाल है। दो पक्षों के बीच झगडा होना स्वाभाविक है। ऐसे अवसरों पर कुम्मिणी अपनी चतुराई दिखाती थी। वह दोनों का पक्ष लेती थी।

अलक्स साहब बीमार पडे तो कुछ दिन केलिए कुम्मिणी उस घर में नौकरानी बनी। साहब के सामने उनकी महिमा गाती थी। वे कंजूस थे। इसलिए बाहर आते ही कुम्मिणी उनकी निंदा करने लगती थी।

कुम्मिणी मेरे घर आती थी। वह मेरी माँ को बहुत चाहती थी। मैं उससे डरता था। क्योंकि उसकी लंबी जीभ होती थी जो बहुत तेज़ थी।

वह मुझे पसंद नही करती थी। कारण तो ये हैं — मैं मुजाहिद होने से मरे हुए मनुष्य को पुकारकर प्रार्थना नही करता था। घर में मौलूद नही मनाता था।

माँ के सामने कुम्मिणी उनका पक्ष लेती थी। मैं उसको पान खरीदने केलिए दो सिक्के भी नही देता था। किन्तु माँ उसको भर पेट भोजन देती थी, चाय और पान देती थी। इसलिए उन दोनों में गहरी मैत्री थी और हम दोनों में शत्रुता।

कुम्मिणी कभी कभी रोती थी। वह एक पुरानी बात है। वह बीस साल की युवती थी। एक काली रात को उसको प्रसव-पीडा हुई। घर के पास जो कुटी बनायी गयी थी उसमें उसने बच्चे को जन्म दिया। एक दिन कुम्मिणी नहाने केलिए बाहर गयी थी। इस बीच कोई जंगली जानवर उसके बच्चे को उठा ले गया। बुढापे में भी उस घटना की याद कर कुम्मिणी घण्टों रो पडती थी।

"बच्चा, बाहर आ जा। पंसिया तुम से मिलने आयी है।" माँ की आवाज कानों में पडी तो मैं चिंता से जाग उठा।

'कुम्मिणी अमर है' यों कह कर मैं छत से नीचे उतर आया।

स्त्री कल और आज

T. P. Kammukoya — III B. Sc., Physics

कुछ लोगों के लिए स्त्री ही संसार की सब से सुन्दर वस्तु है। कुछ कवियों के लिए स्त्रीयों के रूप और यौवन की प्रशंसा ही सबसे चित्ताकर्षक विषय है। प्रेमचंद की दृष्टि में स्त्री जगत में व्याप्त कोमलता, माधुर्य और अलंकार की सजीव प्रतिभा है। उसमें उषा की प्रफुल्लता होगी, पुष्प की कोमलता, कुँदन की चमक, वसंत की छवि और कोयल की ध्वनि भी होगी। स्त्री के संबंध में ऐसा भावपूर्ण एवं आलंकारिक वर्णन सब कालों में हुआ है। अतः 'स्त्री कल और आज' क्या मतलब है, इस संबंध में विचार करना रोचक रहेगा।

पुराने ज़माने की स्त्रीयों की वेष-भूषा, बोल-चाल और आचार विचार में आज कल की स्त्रीयों की वेष-भूषा, बोल-चाल और आचार-विचार से क्या फरक है, इस संबंध में विचार करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि स्त्री में हुए परिवर्तनों का एकमात्र कारण शिक्षा है। स्त्री शिक्षा के कारण ही सब परिवर्तन हुए हैं। अतः स्त्री में हुए परिवर्तनों पर प्रकाश डालने के लिए स्त्री शिक्षा पर भी विचार करना ज़रूरी है।

पुराने ज़माने में यह धारणा समाज में प्रचलित थी कि शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार केवल पुरुषों को है। स्त्रियाँ पुरुषों के लिए विलास के साधन मात्र हैं। रसोई घर और शयनागार के बाहर उनकी कोई दुनिया ही नहीं हैं। स्त्री को एक अभिशप्त प्राणी समझकर उसे पैदा होते ही मार डालने वाले लोग उस ज़माने में थे। किन्तु आज स्थिति बिलकुल बदल गयी है। आधुनिक शिक्षा को ही इसका श्रेय है। आज शिक्षित युवतियाँ अपने धार्मिक आचारों को भी फैशन के भ्रम में पडकर भूलने लगी हैं। उदाहरण के लिए पर्दा की प्रथा आज खतम होने लगा है। आज की स्त्री को समाज में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त है। उसको वोट देने का अधिकार है। विज्ञान, धर्म, राजानीति, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में वह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही है।

वास्तव में यह एक अच्छा परिवर्तन है। स्त्री का एक मनुष्य के जीवन में उत्कृष्ट स्थान होता है। एक मनुष्य की मूल भावनाएँ, विचार, आदर्श चिंतनाएँ जीवन के आरंभ काल में उस की माता से ही मिलती हैं। इस दृष्टि से देखें तो यह निर्णय निकाल सकते हैं कि राष्ट्रीय संस्कृति की मूल धारायें स्त्रियाँ हैं। इसलिए उनको शिक्षा से वंचित रखना बडी मूर्खता है। समाज की उन्नति केलिए स्त्रियों का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है।